साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 9, अंक : 52 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 14 अगस्त 2024 से 20 अगस्त 2024 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

स्वतंत्र भारत में कैसे शुरु हुआ पर्यावरण का पाठ ?

स्वतंत्रता के समय पर्यावरण कोई मुद्दा नहीं था, स्वच्छता जरूर एक मुद्दा था जिस पर गांधीजी काफी जोर देते थे। स्वच्छता रहन-सहन से जुड़ा मामला है, जबकि पर्यावरण का संबंध औद्योगिक गतिविधि से है। भारत में परंपरागत रूप से कारीगरी पर आधारित उद्योग थे। उसका पर्यावरण पर कोई खास असर नहीं होता था। विलायत में बड़ी मशीनों का अविष्कार होने के बाद यह स्थिति नहीं रही। उन मशीनों से बड़े पैमाने पर उत्पादन होता था। उतने ही कच्चे माल की जरूरत होती थी, तैयार माल को खपाने के लिए भी बड़ी आबादी की जरूरत थी। कहने की जरूरत नहीं कि परतंत्रता के आखिरी दिनों में हम पश्चिमी औद्योगिक विकास के लिए कच्चा माल देने और तैयार माल खपाने के साधन बन गए थे।

अंग्रेजी राज में ही हमारी परंपरागत कारीगरी आधारित उद्योगों का विनाश और मशीनी उद्योगों का प्रसार होने लगा था। स्वतंत्रता के बाद भी इस तौर तरीके में उल्लेखनीय बदलाव नहीं हो सका। हालांकि गांधीजी मशीनी सभ्यता से जल्दी से जल्दी छुटकारा पाना चाहते थे। लेकिन देश की आर्थिक स्थिति उन दिनों इतनी खराब थी कि हमने गरीबी से जल्दी छुटकारा पाने के लिए उन्हीं तौर तरीकों को बड़े पैमाने पर अपना लिया जिनकी शुरुआत अंग्रेजी राज में हो चुकी थी। विकसित भारत 2047 के लिए देशवासियों ने भेजे ये सुझाव, खुद पीएम मोदी ने लाल किले से बताया पश्चिमी ढंग के औद्योगिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण का विनाश और प्रदूषण का प्रसार होने लगा। रसद ढोने और कच्चे माल के बंदरगाहों तक पहुंचाने के लिए अंग्रेज रेलगाड़ी लेकर आए। रेल की पटरियों को बिछाने के लिए स्लीपर्स की जरूरत थी और इसके लिए बड़े पैमाने पर जंगल काटे जाने लगे। मशीनों को चलाने के लिए कोयले की जरूरत थी और खदानों से कोयला निकालने के लिए जंगलों की कटाई हुई। दूसरे खनिज पदार्थों के लिए भी जंगलों की कटाई हुई। जंगलों की इस बेतहाशा कटाई से वर्षा में कमी हुई और सूखे की मार पड़ने लगी। तब सिंचाई की सुविधा बढ़ाने के लिए नहरों को बनाया गया। नहरों का जाल फैलाने के लिए नदियों को बांधा जाने लगा। नदियों को बांधने के साथ पनबिजली बनाने का तर्क भी जोड़ दिया गया। सिंचाई में फिर भी कमी रह गई तो नलकूप आ गए। चौमासे के दौरान वर्ष भर के लिए जल-संग्रह कर लेने के कुआं-तालाब की व्यवस्था की भरपूर उपेक्षा शुरु हो गई। पश्चिमी ढंग की मशीन आधारित औद्योगिकरण, रसायनिक खाद आधारित खेती व दूसरे तामझाम का असर हुआ कि हम उस तंगी की हालत से तो निकलते दिखे जिसका सामना 50-60 के दशक में करना पड़ा था। लेकिन अगले दशक भर में इसकी कीमत का पता भी चलने लगा। लोगों में सुगबुगाहट शुरु हुई। 1972 में चमोली में चिपको आंदेलन शुरु हो गया। गांव वाले अपने जंगलों को कटने से बचाना चाहते थे। उनकी आजीविका, उनका भविष्य उन जंगलों पर निर्भर था। इसी दौरान नर्मदा घाटी में बंध रहे बांधों का बुरा असर वहां के खेतिहर समाज पर दिखने लगा जिसकी प्रतिक्रिया में मिट्टी बचाओ आंदोलन शुरु हो गया। पर्यावरण को लेकर देश में शुरुआती हलचल तेज होने लगी। युवाओं ने किए शिक्षा,सुरक्षा, चिकित्सा को लेकर सवाल खड़े,पूछा- देश आजाद लेकिन मानसिक रूप से कब? विश्व के स्तर पर पर्यावरण की चिंता भी उन्हीं दिनों उभरी। संयुक्त राष्ट्र की ओर से 1972 में स्टॉकहोम में विश्व पर्यावरण सम्मेलन हुआ। इसमें भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी भी शामिल हुई। स्टॉकहोम के इस सम्मेलन में पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श हुआ। वैश्विक स्तर पर पर्यावरण की चेतना फैलने लगी। वापस आने पर इंदिरा गांधी की पहल पर वन्यप्राणी संरक्षण अधिनियम-1972 बना। फिर 1980 में वन संरक्षण अधिनियम पारित हुआ। देश के पर्यावरण के इतिहास में 1985-86 का खास स्थान है। भोपाल में यूनियन कार्बाइड कारखाने से गैस रिसने से हजारों लोग मारे गए। उसी साल केन्द्र सरकार ने पर्यावरण संरक्षण अधिनियम बनाया। फिर प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने गंगा एक्शन प्लान की घोषणा की। वैश्विक स्तर पर बिगड़ते पर्यावरण की व्यापक समझ 1990 के दशक में आई। 1992 में ब्राजील के नगर रियो में बड़े स्तर पर शिखर सम्मेलन हुआ जिसे पृथ्वी सम्मेलन कहा गया। तब तक यह साफ हो गया था कि कोयला और पेट्रोलियम पदार्थों के जलने से पृथ्वी की जलवायु में बदलाव आ रहे हैं। लेकिन यूरोप और अमेरिका के देश भले इसके लिए ज्यादा जिम्मेदार थे, पर वे इसका ठीकरा विकासशील गरीब देशों पर फोड़ना चाहते थे। भारत के नेतृत्व में दुनियाभर के विकासशील देश एकजुट हुए और मिलकर अमीर देशों को मजबूर किया कि वे अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करें। देश के कई हिस्सों में लहरा रहा ग्वालियर का तिरंगा, पूरे उत्तर भारत में सिर्फ यहीं बनता है झंडा पर्यावरण गंभीर विषय बन गया था। राजधानी दिल्ली समेत देश के कई नगरों में वायु प्रदूषण इतना बढ़ गया कि सांस लेना दूभर हो गया था। सर्वोच्च न्यायालय ने इसे रोकने के तरीके निकालने की कोशिश की। अधिक धुआं छोड़ने वाली पुरानी गाडियों को सड़क से हटाने और वाहनों में निम्न उत्सर्जन वाली गैसों का उपयोग करने की व्यवस्था हुई। इसी बीच किसानों की आत्महत्या की खबरें आने लगी। हरित क्रांति की विजय गाथा फीकी पड़ने लगी थी। रसायनिक खादों व नलकूप वाली सिंचाई के मंहगे कारोबार आम किसानों के अनुकूल नहीं थे। जो पर्यावरण चेतना 1970-80 के दशक में यहां वहां उठ रही थी, उसका असर 1990 में दिखने लगा। सरकार जिन मामलों में ढीली थी, उन मामलों में अदालत की फटकार पड़ने लगी। देशभर में पर्यावरण पर काम करने का संस्थानों में नई ऊर्जा और संकल्प की स्थिति बनी। अखबारों में पर्यावरण पर इतनी सामग्री आने लगी कि यह एक मुख्य विषय बन गया। उसी दौर में देश की अर्थव्यवस्था को उदारीकरण के रूप में मुक्त व्यापार के लिए खोला गया। 1992 में केबल टीवी का आगमन हुआ। तीन वर्ष के भीतर इंटरनेट आ गया और फिर मोबाइल फोन भी भारत आ गया। इस सबके शोर में उपभोग की उथली संस्कृति आई। अब जलवायु परिवर्तन का शोर है। धरती का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। 1997 में क्योटो सम्मेलन के समय से यह मुद्दा विमर्श में है। फिर 2015 में पेरिस में धरती के बढ़ते तापमान को थामने की गरज से समझौते हुए। हालांकि बाद में दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका ने इसका पालन करने से मना कर दिया। फिर भी वैश्विक स्तर पर यह एक महत्वपूर्ण समझौता है। इस वर्ष भी ग्लासगो में वैश्विक जलवायु सम्मेलन हुआ है जिसमें विश्व के बढ़ते तापमान को औद्योगिक युग के आरंभ होने के पहले के स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस अधिक की सीमा में रखने की घोषणा की गई है। वैश्विक स्तर पर सामने आ रहे तथ्यों और शोध-अध्ययनों से पता चलता है कि भारत में परंपरा से विकसित हवा-पानी के रखरखाव के ढंग अधिक लाभकारी रहे हैं। भारत में पेड़ की पूजा की जाती रही है। इसी तरह कुंओ और तालाबों की श्रृंखला न केवल बरसाती पानी को वर्षभर सहेज कर रखते हैं, भूजल भंडार को भी परिपूर्ण रखते रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में महिला सशक्तिकरण का नया अध्याय लिखा जाएगा -मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भारतीय महिलाएं प्रारंभ से शौर्य और पराक्रम का महत्वपूर्ण उदाहरण रही हैं। भारत का इतिहास महिलाओं के साहस से भरा हुआ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बदलते दौर में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं। इस क्रम में भारत की संसद और विधानसभा में एक तिहाई स्थान पर महिलाओं के निर्वाचन के प्रावधान के प्रयास ऐतिहासिक होंगे। यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आने वाले दो-तीन वर्ष में देश में महिला कल्याण और महिला सशक्तिकरण का नया अध्याय लिखा जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज भोपाल के रवीन्द्र भवन में उच्च शिक्षा और स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित छात्राओं के संवाद एवं सम्मान कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत का पिछले 500 वर्ष का इतिहास देखें तो वह महिलाओं के गौरव और शौर्य से परिपूर्ण रहा है। उन्होंने कहा कि रानी दुर्गावती का 500वां वर्ष चल रहा है। आज की युवा पीढ़ी को उनके शौर्य के बारे में जानकारी होना चाहिए। मध्यप्रदेश की बेटी रानी दुर्गावती ने अपने शासन काल में 51 लड़ाईयां लड़ीं। रानी दुर्गावती ने अकबर की सेना को पूरी वीरता के साथ तीन बार पराजित किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने झांसी की रानी की वीरता का भी उल्लेख किया। उन्होंने देवी अहिल्या बाई के शासन व्यवस्था की जानकारी देते हुए बताया कि देवी अहिल्या बाई ने अपने कार्यकाल में देश के प्रमुख धार्मिक स्थलों सोमनाथ, उज्जैन, बनारस में विशाल मंदिरों का निर्माण कराया। उनकी धर्म के प्रति सच्ची निष्ठा को पूरे सम्मान के साथ याद किया जाता है। प्रदेश की बेटियों की प्रतिभा की चर्चा करते हुए डॉ. यादव ने कहा कि हमारी बेटियों ने हर क्षेत्र में श्रेष्ठ प्रदर्शन किया है। प्रतिभाशाली बेटियों ने देश और दुनियां में मध्यप्रदेश का नाम रौशन किया है। राज्य सरकार प्रदेश की महिलाओं और बेटियों के कल्याण के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने छात्राओं से आग्रह किया की वे देश की महान महिला विभूतियों से प्रेरणा लें। उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारें। भारतीय संस्कृति का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति को दुनिया में श्रेष्ठ संस्कृति के रूप में पहचाना जाता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस मौके पर समग्र शिक्षा के अंतर्गत सैनिटेशन एवं हाइजीन योजना में 19 लाख छात्राओं को 57 करोड़ 18 लाख रुपये की राशि अंतरित की। इस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयों और महाविद्यालय की छात्राओं को स्वच्छता के महत्व और उनके उपायों के बारे में जानकारी दी जाती है। यह योजना स्कूल शिक्षा विभाग के समग्र शिक्षा अभियान के तहत संचालित हो रही है। इस वर्ष योजना में कक्षा 7 से 12 तक की छात्राओं को सेनेटरी नेपकिन के लिए यह राशि अंतरित की गई है। योजना में प्रति छात्रा को एक वर्ष के लिए 300 रूपये की राशि उनके बैंक खाते में अंतरित की गई है।

नेट जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल करने के लिए बिजली क्षेत्र में सधी रणनीति की जरूरत

कार्बन (जीवाश्म ईंधन) का युग समाप्त होने को है। अब हम इस बात पर चर्चा कर सकते हैं कि भारत में जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल कब बंद होगा। परंतु वर्ष 2070 तक विशुद्ध शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य प्राप्त करना है तो वर्ष 2050 तक कार्बन रहित ऊर्जा तंत्र मजबूती से खड़ा करना होगा। एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न इस सोच के साथ जुड़ा है कि आगे परिस्थितियां कैसी रहने वाली हैं। वैज्ञानिकों ने पूरी दुनिया में अक्षय ऊर्जा, ऊर्जा भंडारण और ऊर्जा सक्षमता जैसे चमत्कारिक उपलब्धियां जन मानस को दी ही हैं। अब असली मसला इन्हें बढ़ावा देने का है।

कभी-कभी बिजली क्षेत्र के विशालकाय आकार से हमारा ध्यान हट जाता है। आइए, सेंटर फॉर मॉनिटरिंग इंडियन इकॉनमी (सीएमआईई) की पूंजीगत व्यय की सूची में दी गई उन परियोजनाओं पर नजर डालते हैं, जिनका क्रियान्वयन हो रहा है। इनकी समीक्षा के बाद पता चलता है कि इस समय बिजली से इतर सभी निजी परियोजनों का जितना कुल मूल्य है, उतना तो अकेले बिजली उत्पादन क्षेत्र का ही है। जीवाश्म ईंधन को छोड़कर नवीकरणीय (अक्षय) ऊर्जा अपनाने की दिशा में कदम बढ़ाने की मुहिम (उदाहरण के लिए इलेक्ट्रिक वाहन) को समर्थन देने और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि में योगदान देने के लिए भारतीय बिजली उद्योग को काफी तेजी से प्रगति करनी होगी। निजी क्षेत्र समझ चुका है कि जीवाश्म ईंधन समस्याएं पैदा कर रहा है और इसका इस्तेमाल धीरे-धीरे घटता जाएगा। सबसे बड़ी भारतीय कंपनियों को इसका भान हो चुका है, इसलिए उन्होंने अपनी रणनीति भी बदल ली है। जैसे ही जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल अपने अंतिम पड़ाव पर पहुंचता दिखेगा, उसमें श्रम, पूंजी एवं उद्यम सभी की दिलचस्पी कम होती जाएगी। भारत में जीवाश्म ईंधन का इस्तेमाल तो घटता जा रहा है मगर अक्षय ऊर्जा का ढांचा पूरी तरह तैयार नहीं हो पाया है। इस क्षेत्र में भारत तीन प्रकार के पूर्वग्रह या आत्मसंतुष्टि के भाव से ग्रस्त है। पहली, जो कुछ जरूरी है, उसे सरकार गैर-जिम्मेदाराना तरीके से कोयले का अंधाधुंध इस्तेमाल कर बना लेगी। बिजली की जरूरी मांग पूरी करने के लिए लोक निधि एवं प्रबंधन तंत्र पर्याप्त नहीं होंगे फिर भी एनटीपीसी ताप विद्युत संयंत्रों पर भारीभरकम निवेश करेगी। जब दुनिया के महत्त्वपूर्ण देश भारत पर कार्बन उत्सर्जन कम करने का दबाव डालना शुरू करेंगे तो लागत बढ़ती जाएगी।

भारत जलवायु परिवर्तन से होने वाले खतरे के मुहाने पर खड़ा है और इस लिहाज से दुनिया भर में होने वाले सालाना उत्सर्जन का दसवां हिस्सा उत्सर्जित करना हमारे हित में नहीं है। एक अन्य सोच भी अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में हमारी प्रगति को प्रभावित कर रही है। हमारे दिमाग में यह बात घर कर गई है कि हम अच्छा कर रहे हैं और निजी क्षेत्र पर्याप्त मात्रा में अक्षय ऊर्जा का स्रोत तैयार कर रहा है।निजी क्षेत्र सरकारी कंपनियों को बिजली बेचने से परहेज करता है, इसलिए अक्षय ऊर्जा गतिविधियां व्यावसायिक एवं औद्योगिक खरीदारों पर अधिक केंद्रित हैं। उन तक बिजली पहुंचाना व्यावहारिक है। अक्षय ऊर्जा के लिए वर्तमान ऊर्जा ढांचे पर गहराई से विचार करना होगा। अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में जिस लचीलेपन की जरूरत है वह तैयार करने और पारेषण एवं वितरण को नई दिशा देने के लिए बड़े निवेश की जरूरत है। ये कठिनाइयां आंकड़ों में भी झलक रही हैं। भारत में सालाना अक्षय ऊर्जा परियोजनाएं मौजूदा समस्याओं की तुलना में तेजी से तैयार नहीं हो पा रही हैं। भारत में कुल बिजली उत्पादन में अक्षय ऊर्जा की हिस्सेदारी बढ़कर लगभग 20 प्रतिशत हो गई है, मगर दूसरे देशों से तुलना करें तो यह कम ठहरती है। इसे सालाना 3 प्रतिशत की दर से वृद्धि करनी होगी जबकि मौजूदा दर लगभग 30 आधार अंक प्रति वर्ष है। यह धारणा भी हमें आगे नहीं बढ़ने दे रही है कि 'हम पिछले कई वर्षों से तमाम बाधाओं के बीच आगे बढ़ रहे हैं और आगे भी कोई न कोई रास्ता निकल जाएगा'। अधिकारी पिछले 20 वर्षों से आगे कदम बढ़ाने के एक साथ कई उपाय करते रहे हैं। हम समस्या सुलझाने में उनकी रचनात्मक सोच की प्रशंसा की जा सकती है, मगर अब कई दिशाओं से दबाव बढ़ने लगा है और आगे ऐसा करते रहना बहुत मुश्किल हो जाएगा। जो नहीं हो सकता वह नहीं ही होता है। आर्थिक वृद्धि सुस्त होने के कारण बिजली की मांग अधिक नहीं बढ़ पाई है मगर हम सभी को यह उम्मीद करनी चाहिए कि इस स्थिति में तेजी से बदलाव होगा। दिन में धूप तेज होती है और बिजली की जरूरत पूरी हो जाती है मगर मगर शाम के समय पुरानी व्यवस्था घुटने टेकने लगती है। तो फिर क्या उपाय किया जा सकता है? रणनीतिक तौर पर सोचें तो दो समस्याएं नजर आ रही हैं। सबसे पहले बिजली क्षेत्र में बदलाव की जरूरत है ताकि बिजली का पर्याप्त उत्पादन हो सके। साथ ही अक्षय ऊर्जा उत्पादन की हिस्सेदारी सालाना 3 प्रतिशत अंक दर से बढ़ाई जाए।

तिरंगा हमारी आन-बान-शान का प्रतीक - मुख्यमंत्री डॉ. यादव

स्वतंत्रता दिवस का महत्व हमारे सभी त्यौहारों से अधिक

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जीप में सवार होकर की तिरंगा यात्रा की अगुवाई

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि तिरंगा हमारी आन-बान-शान का प्रतीक है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने हर घर तिरंगा अभियान के माध्यम से पूरे देश को देशभक्ति और स्वतंत्रता की भावना में ओत-प्रोत होने का अवसर प्रदान किया है। तिरंगे में विद्यमान चक्र देश की गति को दर्शाता है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में हमने देश को विश्व की पांचवीं अर्थव्यवस्था में शामिल किया है। देश की शक्ति और विशेष कर युवा सामर्थ्य के माध्यम से हम जल्द ही विश्व की तीसरी अर्थव्यवस्था होंगे। स्वतंत्रता दिवस का महत्व हमारे सभी प्रमुख त्यौहार होली, दिवाली से अधिक है, अतः हर घर में तिरंगा लहराना चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत कर्मश्री संस्था द्वारा कोलार रोड स्थित मदर टेरेसा स्कूल से निकाली जा रही तिरंगा यात्रा के शुभारंभ अवसर पर तिरंगा यात्रा के सहभागियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने जन-गण-मन के राष्ट्र गान के साथ यात्रा का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जीप में सवार होकर तिरंगा लहराते हुए यात्रा की अगुवाई की। इस अवसर पर विधायक श्री रामेश्वर शर्मा सहित बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमारी बौद्धिक क्षमता, परिश्रम और दक्षता के आधार पर विकास के पथ पर अग्रसर हैं। प्रदेश ने खेती-किसानों में लगातार प्रगति की है। युवाओं के लिए रोजगार के अवसर सृजित करने के उद्देश्य से औद्योगिक गतिविधियों और सूचना प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मोटर साइकिलों पर सवार युवा तिरंगा लहराते हुए यात्रा में आगे बढ़ रहे थे। सड़क के दोनों ओर खड़े स्कूली बच्चे तिरंगा लहराकर वंदे-मातरम तथा भारत माता की जय के नारों के साथ तिरंगा यात्रा का अभिवादन कर रहे थे। कोलार रोड पर जगह-जगह बने सामाजिक संस्थाओं, व्यापारी संगठनों, समाजसेवियों, महिला संगठनों के मंचों से तिरंगा यात्रा का हार्दिक स्वागत किया गया। यात्रा में ड्यूटी कर रहे पुलिस कांस्टेबल भी अपनी मोटरसाइकिल पर तिरंगा लहराते हुए दायित्व निर्वहन कर रहे थे। यात्रा के मार्ग पर दुकानों, मकानों के अतिरिक्त वाहनों को भी तिरंगे से सजाया गया था। परिणामस्वरूप तिरंगा यात्रा से क्षेत्र का संपूर्ण वातावरण देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत था।

स्वाधीनता की अमर कथा

आजादी कहने को सिर्फ एक शब्द है लेकिन इसकी भव्यता में कोई भी शब्दों में नहीं बांध सकता. गुलामी का दर्द शायद आज के युवा समझ ना सकें जो पब में देर रात तक पीने को अपनी आजादी मानते हैं. आजादी जाननी है तो उन लोगों की जिंदगी को महसूस कीजिए जो आज भी किसी बड़े जमींदार के खेत में गुलामी कर रहे हैं, आजादी का अर्थ उस छोटे बच्चों से जाकर पूछें जो मात्र कुछ पैसे के लिए अपने बचपन के दिन एक ढाबे पर बिता रहा है.

आज आजादी का मतलब अपने उन्माद में नग्न होकर नाचना भर रह गया है लेकिन शायद ही कोई उस आजादी को समझ सकता है जिसका मूल्य देश ने भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, सुभाषचन्द्र बोस आदि के प्राण खोकर चुकाया है. देश की आजादी की कहानी में शायद ही कोई ऐसा पन्ना हो जो आंसुओं से होकर ना गुजरा हो. झांसी की रानी से गांधी जी के असहयोग आंदोलन तक की मेहनत के बाद हमें आजादी प्राप्त हुई तो चलिए आज इस आजादी की कहानी पर एक नजर डालें. सन 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महायज्ञ का प्रारम्भ झांसी की रानी और मंगल पांडे ने किया और अपने प्राणों को भारत माता पर न्यौछावर किया. देखते ही देखते यह चिंगारी एक महासंग्राम में बदल गयी जिसमें पूरा देश कूद पड़ा....

कैसे देश में तैयार किया जा सकता है प्रभावी कार्बन बाजार, सीएसई ने पेश किया रोडमैप

नई दिल्ली। भारत बढ़ते उत्सर्जन पर लगाम लगाने के लिए अपना खुद का राष्ट्रीय कार्बन बाजार शुरू करने की तैयारी कर रहा है। जो उसके महत्वाकांक्षी जलवायु लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। ऐसे में दिल्ली स्थित थिंक टैंक सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (सीएसई) ने कार्बन बाजार को दिशा देने और उसे प्रभावी बनाने के लिए एक स्पष्ट रोडमैप तैयार किया है।

सीएसई ने 13 अगस्त 2024 को एक ग्लोबल वेबिनार में अपनी नई रिपोर्ट को जारी किया है। द इंडियन कार्बन मार्किट- पाथवेज टुवर्ड्स एन इफेक्टिव मैकेनिज्म नामक इस रिपोर्ट के एक भाग के रूप में इस प्रस्तावित रोडमैप को जारी किया है। गौरतलब है कि भारत ने 2030 तक अपने राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान यानी एनडीसी लक्ष्यों को हासिल करने पर प्रतिबद्धता जताई है। साथ ही जलवायु परिवर्तन पर संयुक्त राष्ट्र फ्रेमवर्क कन्वेंशन (यूएनएफसीसी) के दिशा-निर्देशों का पालन करते हुए 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन का लक्ष्य रखा गया है। इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए भारत अपने बढ़ते उत्सर्जन को कम करने के तरीकों की खोज कर रहा है। भारत का अपने खुद का कार्बन बाजार विकसित करने का फैसला इन्हीं लक्ष्यों को हासिल करने की दिशा में उठाया एक कदम है। इसका मकसद देश में बढ़ते उत्सर्जन पर अंकुश लगाना है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी 2024-25 के लिए जारी बजट में घोषणा की थी कि उन उद्योगों की मदद के लिए योजना और नए नियम बनाए जाएंगे, जिनके लिए प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (पीएटी) प्रणाली से भारतीय कार्बन बाजार (आईसीएम) में स्थानांतरित करना कठिन है। बता दें कि दुनिया के कई देश अपने उत्सर्जन को कम करने के लिए कार्बन बाजार की मदद लेते हैं। उसी राह पर चलते हुए भारत, ऊर्जा संरक्षण (संशोधन) अधिनियम 2022 के तहत जारी योजना के अनुसार अपना खुद का राष्ट्रीय कार्बन बाजार बनाने पर काम कर रहा है। बता दें कि इससे पहले जुलाई 2023 में, ग्रीनहाउस गैसों के बढ़ते उत्सर्जन पर लगाम लगाने के लिए कार्बन क्रेडिट और ट्रेडिंग योजना (सीसीटीएस) की शुरूआत की गई थी। वेबिनार में बोलते हुए, सीएसई की महानिदेशक सुनीता नारायण ने कहा है कि, नए भारतीय कार्बन बाजार में देश भर में होने वाले उत्सर्जन को शामिल किया जाना चाहिए। उनका सुझाव है कि बहुत अधिक उत्सर्जन करने वाले क्षेत्रों के लिए एक बड़ा राष्ट्रव्यापी कार्बन बाजार होना चाहिए ताकि चीजें सरल और प्रभावी बनी रहें। साथ ही उन्होंने कार्बन का उच्च मूल्य निर्धारित करने के साथ सटीक आंकड़ों और पारदर्शिता की आवश्यकता पर भी जोर दिया है।

वहीं अपनी इस नई रिपोर्ट में सीएसई ने दुनिया भर की मौजूदा और अतीत की उत्सर्जन व्यापार योजनाओं से सबक लिए हैं। इसमें भारत में चल रही योजनाएं भी शामिल हैं। इससे भारत में प्रभावी कार्बन बाजार स्थापित करने और यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि वे उत्सर्जन को सफलतापूर्वक कम करें। सीएसई रिपोर्ट में दुनिया भर में इस्तेमाल की जा रही चार एमिशन ट्रेडिंग स्कीम्स (ईटीएस) का विश्लेषण किया गया है। इनमें यूरोपियन यूनियन उत्सर्जन व्यापार प्रणाली, कोरियाई ईटीएस, चीनी ईटीएस और सूरत उत्सर्जन व्यापार प्रणाली शामिल है। रिपोर्ट में भारत की प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (पीएटी) योजना की भी समीक्षा की गई है, जो हर तीन साल में ऊर्जा कटौती के लक्ष्य निर्धारित करती है, क्योंकि यह नए भारतीय कार्बन बाजार को आकार देने में मदद करेगी। इस बारे में सीएसई के औद्योगिक प्रदूषण कार्यक्रम के निदेशक निवित यादव का कहना है कि, पीएटी योजना का उद्देश्य उद्योगों की ऊर्जा दक्षता में सुधार करना था, लेकिन इसके कार्यान्वयन में कई खामियां थी। हमारे विश्लेषण से पता चलता है कि इसकी वजह से उत्सर्जन में मामूली गिरावट आई है, जो पर्याप्त नहीं है, क्योंकि भारत कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने की दिशा में काम कर रहा है, खासकर उन उद्योगों में जिन्हें बदलना मुश्किल है। पीएटी के किए अपने मूल्यांकन में, सीएसई ने बिजली, इस्पात और सीमेंट क्षेत्रों के उत्सर्जन में आने वाली कमी की समीक्षा की है। सीएसई से जुड़े शोधकर्ता पार्थ कुमार ने जानकारी दी है कि, 2016 में, भारतीय इस्पात क्षेत्र ने 13.5 करोड़ टन सीओ2 उत्सर्जित किया। वहीं 2012 से 2020 के बीच यह प्रति वर्ष केवल औसतन 25 लाख टन उत्सर्जन कम करने में कामयाब रही। मतलब की इस क्षेत्र से होते उत्सर्जन में सालाना महज 1.85 फीसदी की गिरावट आई। उनके मुताबिक इसी तरह सीमेंट क्षेत्र से हो रहे उत्सर्जन में एक फीसदी से भी कम की कमी आई। वहीं बिजली क्षेत्र छह वर्षों की अवधि में 2016 के अपने कुल सीओ2 उत्सर्जन में महज 2.3 फीसदी की ही कटौती करने में कामयाब रहा। विश्लेषण में पीएटी योजना में मौजूद चुनौतियों को भी उजागर किया है। इनके मुताबिक पीएटी योजना को बहुत अधिक ईएससीईआरटीएस, आसान लक्ष्य और देरी जैसी समस्याओं से जूझना पड़ा। ऐसे में नई कार्बन क्रेडिट और ट्रेडिंग योजना, जो पीएटी पर आधारित होगी, उसमें इन मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता है। रिपोर्ट में कार्बन बाजार के समक्ष मौजूद चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि दुनिया के कई कार्बन बाजारों ने शुरूआत में कार्बन की कम कीमतों और पैसे की कमी का सामना किया है। भारत पीएटी योजना भी कम कीमतों और बहुत ज्यादा सर्टिफिकेट की समस्या से जूझ रही है। ऐसे में यादव का कहना है कि कार्बन क्रेडिट और ट्रेडिंग योजना को बाजार की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने और डीकार्बोनाइजेशन को बढ़ावा देने के लिए कार्बन का एक सही मूल्य निर्धारित करने की आवश्यकता है। जो उत्सर्जकों को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए केवल क्रेडिट खरीदने के बजाय उत्सर्जन को अधिक प्रभावी ढंग से कम करने के लिए प्रोत्साहित करेगा।

5 फीसदी बायोडीजल मिश्रण के लिए एथनॉल की किल्लत, सरकार का फोकस अब उपयोग किए कुकिंग ऑयल पर

सरकार 2030 तक देश में बिकने वाले डीजल में 5 फीसदी बायोडीजल मिश्रण के अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए एथनॉल का उपयोग करने की योजना बना रही थी मगर एथनॉल के उत्पादन में उतार-चढ़ाव को देखते हुए उसे अपनी योजना स्थगित करनी पड़ी। एक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। अधिकारियों ने कहा कि इसके बजाय यह अब यूज्ड कुकिंग ऑयल या उपयोग किए जा चुके खाद्य तेल (यूसीओ) के उपयोग को दोगुना किया जा रहा है और इसके लिए 2019 में शुरू की गई कुकिंग ऑयल के पुन- इस्तेमाल (आरयूसीओ) पहल का विस्तार करने की योजना है। यूरोप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला बायोडीजल का संदर्भ पारंपरिक रूप से वनस्पति तेल, पशु वसा या रेस्तरांओं के रीसाइकल ग्रीस से तैयार बायोडिग्रेडेबल ईंधन से है। लेकिन सरकार द्वारा बायोडीजल उत्पादन के लिए अधिसूचित फीडस्टॉक की सीमित उपलब्धता की वजह से भारत में बड़े पैमाने पर मिश्रण करने की राह में कई बाधाएं आई हैं। इनमें गैर-खाद्य तेल, पशु वसा, एसिड ऑयल और यूज्ड कुकिंग ऑयल की सीमित उपलब्धता शामिल हैं। पेट्रोलियम मंत्रालय ने लोक सभा को बताया था कि अगस्त 2021 में बायोडीजल मिश्रित डीजल की हिस्सेदारी 0.1 फीसदी से भी कम थी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008